International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 06 June- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

जनपद सुल्तानपुर में प्रमुख रवी फसलों से प्राप्त आय का विश्लेषण

डॉ0 शैलेन्द्र कुमार सिंह[1]
प्रमोद कुमार वर्मा[2]
1.सहा0 आचार्य अर्थशास्त्र NGBU प्रयागराज 2. **शोध** छात्र

सारांश–भारत एक कृषि प्रधान देश है जहाँ पर अधिकांश लोग कृषि कार्यों में लगे हुए हैं। लेकिन अधिक लोगों के लगे होने के बावजूद अधिक उत्पादन नहीं प्राप्त होता है। इसका मुख्य कारण क्षेत्र के छोटे–छोटे भागों में यन्त्रीकरण का अभाव है। बढ़ती आबादी घटती उपजाऊ कृषि भूमि, कम होते रोजगार तथा निवेश एवं बाजार के जोखिमों ने कृषि क्षेत्र में कार्यरत युवाओं के समक्ष कृषि को लाभकारी बनाने में बड़ी चुनौती खड़ी कर दी है। कृषि में कौशल विकास इन चुनौतियों का उचित समाधान बन सकता है।

Keywords-— कृषि विविधीकरण–कृषि ऋण, कृषि वित्त,सीमांत किसान,कृषि यंत्रीकरण।

प्रस्तावना-रोजगार पर राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय (एन०एस०ओ०) के 68वें चरण में यह अनुमान लगाया गया है कि लगभग 48.9 प्रतिशत कामगारों की आजीविका का मुख्य साधन कृषि ही है। साथ ही हमारी 68.84 प्रतिशत जनसंख्या (जनगणना 2011 के अनुसार) ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। 2004–05 में सभी किसानों के लिए गरीबी अनुपात 15.2 प्रतिशत होने का अनुमान लगाया गया था यह अनुपात भूमिहीन किसानों में 22 प्रतिशत, उप सीमान्त किसानों में 20 प्रतिशत, सीमान्त किसानों में 18.1 प्रतिशत, छोटे किसानों में 14.8 प्रतिशत और मध्यम एवं बड़े किसानों में 9.8 प्रतिशत था। इनमें अधिकांश किसानों को अपनी उपभोग आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ऋण लेना पड़ता है।

साहित्य की समीक्षा–डोर्जी, जे०टी० एट आल (2013) ने अपने शोध पत्र में देखा कि सिंचाई आधारित कृषि प्रणालियों में भी बागवानी कृषि प्रणाली के साथ पशुधन पर विविधीकरण पर अधिक जोर देने की आवश्यकता है क्योंकि वे कृषि आय को स्थिर करते हैं। रोजगार के अवसर को बढ़ाते हैं और कम रिटर्न के जोखिम को कम करते हैं।

चन्द्र, रमेश एट आल (2015) ने अपने अध्ययन में पाया कि पिछले तीन दशकों में कृषि से किसानों की आय का अनुमान प्रस्तुत करता है। पिछले तीन दशकों के दौरान किन अवधियों में इनपुट लागत करने के बाद कृषि गतिविधियों से किसानों द्वारा अर्जित आय में कम से उच्च वृद्धि देखी गयी। किसी भी अवधि में किसानों की आय या खेती की लाभप्रदता में कोई कमी नहीं दिखी। सन् 2011–12 में कृषि आय में वृद्धि लगभग एक प्रतिशत तक गिर गई है और यह हाल के वर्षों में कृषि संकट में अचानक वृद्धि का एक महत्वपूर्ण कारण है।

सुरजीत, वी० (2017) के अध्ययन से ज्ञात होता है कि यह लेख कृषि आय के आकलन की कार्य प्रणाली और प्रक्रिया के विकास पर ध्यान देने के साथ औपनिवेशिक काल से लेकर वर्तमान तक भारत में कृषि व्यवसाय आय पर किये गये अध्ययनों की समीक्षा करता है और ऐसे अध्ययनों के विकास को चार चरणों में वर्गीकृत करता है।

शिवशंकर (2017) ने अपने अध्ययन में पाया कि कृषि विविधीकरण जन–जीवन को निरन्तर प्रभावित करती है इसमें दिन प्रतिदिन विकास प्रक्रियाओं से प्रभावित कृषि तथा उस पर आधारित उद्योग तथा अन्य उद्योग धन्धे ग्रामीण विकास हेतु केन्द्रीय भूमिका का निर्वाह करते हैं।

सुब्रमण्यम्, एस० (2018) ने अपने अध्ययन में पाया कि यह पेपर कृषक परिवार के आवंटन निर्णय का विश्लेषण करता है। तीन सम्भावनाओं पर विचार करके अर्थात् केवल खेत में काम करना, केवल गैर कृषि गतिविधियाँ अपनाना और बहु–गतिविधि में काम करना। अध्ययन में भारत मानव विकास सर्वेक्षण आँकड़ों का उपयोग किया गया है और विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने के लिए कृषक परिवारों के निर्णय का विश्लेषण करने के लिए सामान्यीकृत बहुराष्ट्रीय लागेर मॉडल का उपयोग किया गया है।

लावन्या, बी०टी० और मन्जुनाथ, ए०वी० (2019) ने अपने अध्ययन में पाया कि गन्ना किसानों की निर्णय लेने की प्रक्रिया को समझने के लिए निर्धारकों एवं अनुमानी निर्णय सिद्धान्त की पहचान करने के लिए वर्णनात्मक आंकड़ों का उपयोग किया गया है।

अध्ययन की विधि–उत्तर प्रदेश के पूर्वी क्षेत्र में आने वाले जनपद सुल्तानपुर को यादृच्छिक रूप से चुना गया है। जनपद में कुल 14 विकासखण्डों में से दो विकासखण्ड, एक मुख्यालय से नजदीक तथा दूसरा मुख्यालय से दूर चुना गया है। प्रत्येक विकासखण्ड से दो–दो

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 06 June- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

गाँवों का चयन किया गया है। नमूना लेने के लिए गाँव के किसानों को चार वर्गों में वर्गीकृत किया गया है— 1. सीमान्त किसान (0 से 1 हेक्टेयर तक), 2. लघु किसान (1.01 हे० से 2 हेक्टेयर तक), 3. अर्द्ध मध्यम किसान (2.01 हे० से 4 हेक्टेयर तक), 4. मध्यम किसान (4.01 हे० से 10 हेक्टेयर तक)। कुल 205 नमूना किसानों का चयन किया गया। जिनमें सीमान्त किसानों की संख्या 143, लघु किसानों की संख्या 43, अर्द्ध मध्यम किसानों की संख्या 15 और मध्यम किसानों की संख्या मात्र 4 थी। अध्ययन में उपयोग की जाने वाली तकनीक बहुस्तरीय स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना तकनीक का प्रयोग किया गया। अध्ययन की संदर्भ अवधि 2018—19 थी।

विश्लेषण—निम्नलिखित सारणी का विश्लेषण आगे किया गया है—

श्रेणीवार नमूना किसानों द्वारा रवी फसलों की उत्पादन लागत और उत्पादन मूल्य 2018—19

क्र. सं.	नमूना किसानों की श्रेणी	नमूना किसानों की संख्या	उत्पादन में लगी कुल लागत			उत्पादन मूल्य			शुद्ध आय
			खाद बीज आदि	श्रम आदि	योग	मुख्य उत्पादन	अन्य उत्पादन	योग	
1.	सीमान्त किसान								
(i)	मुख्यालय से नजदीक	70	8450	4650	13100	25500	12000	37500	24400
(ii)	मुख्यालय से दूर	73	6250	3500	9750	18700	8800	27500	17750
2.	लघु किसान								
(i)	मुख्यालय से नजदीक	26	50450	28500	78950	159800	75200	235000	156050
(ii)	मुख्यालय से दूर	17	47900	26500	74400	136000	64000	200000	125600
3.	अर्द्ध मध्यम किसान								
(i)	मुख्यालय से नजदीक	06	91500	45800	137300	272000	128000	400000	262700
(ii)	मुख्यालय से दूर	09	87550	44500	132050	255000	120000	375000	242950
4.	मध्यम किसान								
(i)	मुख्यालय से नजदीक	02	110000	70000	180000	365500	172000	537500	357500
(ii)	मुख्यालय से दूर	02	100500	65500	166000	357000	168000	525000	359000
	कुल किसान								
(i)	मुख्यालय से नजदीक	104	25694	14377	40072	79835	37569	117404	77332
(ii)	मुख्यालय से दूर	101	21726	12253	34624	66199	31153	97352	62728
	योग	205	24057	13331	37388	73117	34408	107524	34407

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 06 June- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

जनपद सुल्तानपुर में वर्ष 2018–19 में रवी फसलों से प्राप्त प्रति किसान कुल शुद्ध आय 34,407 रूपये थी जिसमें उत्पादन से प्राप्त कुल आय 1,07,524 रूपये था। प्रति किसान कुल 37,388 रूपये थी जिसमें 24,057 रूपये खाद बीज आदि से और 13,331 रूपये श्रम आदि पर व्यय किया जबकि उत्पादन लागत अपेक्षाकृतकम लगी। मुख्यालय से नजदीक वाले गाँव के प्रति किसान की वर्ष पर्यन्त शुद्ध आय वर्ष 2018–19 में 77,332 रूपये थी। जिसमें उत्पादन मूल्य का योगदान 1,17,404 रूपये था और उत्पादन में लगी कुल लागत का मूल्य 40,072 रूपये था। मुख्यालय से दूर वाले गाँव की वर्ष पर्यन्त प्रति किसान शुद्ध आय 62728 रूपये थी। जिसमें मुख्य उत्पादन से 66199 रूपये और अन्य उतपादन से 31,153 रूपये थी और कुल उत्पादन से आय 97,352 रूपये थी। उत्पादन लागत में खाद, बीज आदि और श्रम आदि को सम्मिलित किया गया है। कुल उत्पादन लागत 34,624 रूपये लगाई गयी है। इस प्रकार मुख्यालय से नजदीक वाले गाँव के किसानों द्वारा अधिक आय अर्जित की गयी मुख्यालय से दूर वाले गाँव के किसानों की अपेक्षा।

तालिका द्वारा विश्लेषित जनपद सुल्तानपुर के मुख्यालय से नजदीक वाले गाँव की प्रति सीमान्त किसान वर्ष पर्यन्त कुल शुद्ध आय 24,400 रूपये थी जिसमें कुल उत्पादन का म्ल्य 37,500 रूपये था। उत्पादन कार्यों में लगी कुल लागत का मूल्य 13,100 रूपये था। वहीं पर मुख्यालय से दूर वाले गाँव के प्रति किसान की शुद्ध आय 17,750 रूपये थी जिसमें मुख्य उत्पादन से 18,700 रूपये तथा अन्य उत्पादन से 8,800 रूपये प्राप्त हुई। इस प्रकार मुख्यालय से दूर वाल गाँव के किसानों ने अधिक आय अर्जित की। वहीं पर लागत की अपेक्षा लगभग दो गुनी आय प्राप्त हुई।

तालिका द्वारा विश्लेषित जनपद सुल्तानपुर में मुख्यालय से नजदीक वाले गाँव के प्रति किसान कुल शुद्ध आय 1,56,050 रूपये थी। जनपद के लघु किसान की मुख्य उत्पादन से आय 1,59,800 रूपये थी। जबकि अन्य उत्पादन से आय 75,200 रूपये थी। इस प्रकार प्रति लघु किसान कुल आय 2,35,000 रूपये था। कुल रवी फसल के उत्पादन में कुल लागत 78,950 रूपये जिसमें खाद, बीज आदि पर 50450 रूपये और श्रम आदि पर 28,500 रूपये खर्च किया गयाज्ञ। वहीं पर मुख्यालय से दूर वाले गाँव के लघु किसानों की वर्ष पर्यन्त प्रति किसान शुद्ध

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 06 June- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

आय 1,25,600 रूपये थी जिसमें उत्पादन से प्राप्त कुल आय 2,00,000 रूपये थी और उत्पादन प्रक्रिया में खर्च किया गया धन प्रति किसान 74,400 रूपये था। इस प्रकार मुख्यालय से दूर वाले किसान की उत्पादन प्रक्रिया में लागत कम लगी तो उत्पादन मूल्य भी कम प्राप्त हुआ।

सारणी के विश्लेषण से यह पता चलता है कि अर्द्ध मध्यम किसानों की वर्ष पर्यन्त, जो मुख्यालय से नजदीक के किसान हैं उनकी शुद्ध आय प्रति किसान 2,62,700 रूपये थी जिसमें उत्पादन से प्राप्त आय 4,00,000 रूपये तथा उत्पादन में लगी कुल लागत 1,37,300 थी। वहीं पर मुख्यालय से दूर वाले गाँव के किसानों की शुद्ध आय प्रति किसान 2,42,950 रूपये थी जिसमें कुल उत्पादन से प्राप्त आय 3,75,000 रूपये थी और कुल उत्पादन लागत 1,32,050 थी। इस प्रकार मुख्यालय से नजदीक के किसान उत्पादन लागत का लगभग तीन गुना अधिक प्राप्त करते हैं जबकि मुख्यालय दूर वाले किसान तीन गुने से कम आय प्राप्त करते हैं।

जनपद सुल्तानपुर के मध्यम किसानों द्वारा वष्र पर्यन्त प्रति किसान, जो मुख्यालय से नजदीक के किसान है कुल शुद्ध आय 3,57,500 रूपये प्राप्त किये। जिसमें खाद, बीज आदि पर 1,10,000 रूपये और श्रम आदि पर 70,000 रूपये खर्च किये। इस प्रकार उत्पादन लागत 1,80,000 रूपये खर्च किया गया। वहीं पर उत्पादन से प्राप्त कुल आय 5,37,500 थी जिसमें मुख्य उत्पादन से 3,65,500 रूपये तथा अन्य उत्पादन से 1,72,000 रूपये प्राप्त हुई। वहीं पर मुख्यालय से दूर के गाँव के किसान वर्ष पर्यन्त शुद्ध आय प्रति किसान 3,59,000 रूपये प्राप्त किये। जिसमें उत्पादन मूल्य से कुल 5,25,000 रूपये प्राप्त किये तथा उत्पादन लागत पर कुल 1,66,000 खर्च किया गया। इस प्रकार मुख्यालय से नजदीक के किसान जहाँ खाद, बीज आदि और श्रम आदि पर अधिक खर्च किये वहीं उन्हें मुख्य उत्पादन और अन्य उत्पादन से भी अधिक आय अर्जित हुई।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 06 June- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

निष्कर्ष–

1. अध्ययन से निष्कर्ष निकलता है कि मुख्यालय से नजदीक वाले गाँव के किसान अधिक आय अर्जित करते हैं जबकि मुख्यालय से दूर के किसान कम आय अर्जित करते हैं।
2. अध्ययन से ज्ञात है कि मुख्यालय से नजदीक के किसान दूर वाले गाँव की अपेक्षा उत्पादन लागत अधिक लगाते हैं।
3. अध्ययन से ज्ञात होता है कि मुख्यालय से दूर वाले गाँव के किसान उत्पादन प्रक्रिया में कम खर्च करते हैं और उन्हें कम उत्पादन मूल्य भी प्राप्त होता है।
4. अध्ययन से ज्ञात होता है कि शहर नजदीक होने के कारण खाद, बीज और श्रम आदि पर अधिक खर्च करना पड़ता है।
5. अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त होता है कि मुख्यालय से नजदीक के किसान उत्पादन लागत का लगभग तीन गुना प्राप्त करते हैं जबकि मुख्यालय से दूर के किसान तीन गुने से कम आय प्राप्त करते हैं।

सुझाव–

1. सरकार को चाहिए कि किसानों के विकास लिए सिंचाई की अच्छी व्यवस्थाा हो जिससे वे सभी मौसम में फसलों की उपज प्राप्त कर सके।
2. ग्रामीण क्षेत्रों में खाद, बीज आदि की उचित व्यवस्था, सड़कों की उचित व्यवस्था और सिंचाई की सुविधा होनी चाहिए।
3. किसानों के फसलों के विपणन की उचित व्यवस्था होनी चाहिए जिससे उन्हें लाभकारी मूल्य प्राप्त हो सके।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 06 June- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

डोर्जी, जे०टी०, यादव, डी०बी० और सिन्दे, एच०आर० (2013). किसानों की आजीविका सुरक्षा में सुधार के लिए कृषि प्रणालियों की स्थिरता. एग्रील में प्रकाशित इको. रेस. समीक्षा, वाल्यूम 26 पी०पी० 243 ।

चन्द्र, रमेश, सक्सेना, राका और राना, सिमी. (2015). भारत में कृषि आय का अनुमान और विश्लेषण 1983–84 से 2011–12. इकोनॉमिक एण्ड पालिटिकल वीकली. वाल्यूम एल (नं. 22)।

ओझा, एस० के० (2016). कृषि एवं प्रौद्योगिकी. बौद्धिक प्रकाशन, पी०पी० 17, 24 ।

सुरजीत, वी० (2017). भारत में कृषि आय सांख्यिकीय का विकास : एक समीक्षा. कृषि अध्ययन खण्ड की समीक्षा वाल्यूम 7 (नं. 2)।

शिवशंकर (2017). कृषि भूमि उपयोग प्रतिरूप तथा इसका सामाजिक आर्थिक विकास पर प्रभाव अप्रकाशित शोध प्रबन्ध इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद।

सुब्रमण्यम्, एस० (2018). कृषि गैर–कृषि और बहुविधि में ग्रामीण परिवारों की भागीदारी : भारत से साक्ष्य. इस्टीट्यूट फॉर सोशल एण्ड इकोनॉमिक चेंज, बैंगलोर।

लावण्या, वी०टी० और मन्जुनाथ, ए०वी० (2019) गन्ना किसानों के सूक्ष्म स्तरीय निर्णयों के निर्धारक. इंस्टीट्यूट फॉर सोशल एण्ड इकोनॉमिक चेंज. बैगलोर।